PMYV

# श्रावण पुत्रदा एकादशी

**23 अगस्त**



## उच्च संतान प्राप्ति तथा उन्हें सुसंस्कारों से युक्त कर अद्वितीय व्यक्तित्व के निर्माण हेतु

# सोलह कला पूर्ण ओजस्वी संतान प्राप्ति पुत्रदा दीक्षा

जिस तरह रेगिस्तान में एक बूंद की तलाश व्यक्ति को रहती है, उसी तरह किसी स्त्री को भी अपने सूने जीवन को खुशियां से भरने के लिये एक नन्हें शिशु की ललक मन में रहती ही है। यदि विवाह के दो तीन साल बाद भी कोई स्त्री माँ नहीं बनती या पुत्र की प्राप्ति नहीं होती, तो उसे हीन दृष्टि से देखा जाता है और यदि वह माँ बनने योग्य न हो, तो समाज उसे बांझ, कुलटा, आदि **अपशकुनी नामों** से पुकारता है और वह घुट-घुट कर जीने पर **मजबूर** हो जाती है। संतान का न होना सामाजिक दृष्टि से स्त्री के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप माना गया है।

जीवन के सोलह संस्कारों की पूर्णता का भाव तभी प्राप्त होता है जब विवाह के बाद सही समय पर श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति हो सके। जिससे कुल की वृद्धि हो सके। जिससे पुरूष पूर्ण पुरूषत्व से युक्त होता है और स्त्री मातृत्व शक्ति से युक्त होती है जबकि इसके विपरित निःसंतान दम्पती का गृहस्थ जीवन बिल्कुल ही रूखा-सूखा सा बन जाता है विशेष रूप से भारतीय समाज में स्त्रियों को प्रताड़ित किया जाता है। साथ ही अनेक लांछनों से युक्त नारकीय जीवन भोगना पड़ता है।

सुयोग्य संतान को जीवन में लक्ष्मी का ही एक स्वरूप माना गया है। संतान बालक हो या बालिका; महत्त्वपूर्ण तथ्य यह होता है कि वह जीवन में कितनी ऊँचाई तक पहुँचेगा, उसका स्वास्थ्य कैसा रहेगा, उसकी शिक्षा-दीक्षा कैसी होगी इत्यादि। जिनके पास संतान नहीं हैं तथा जो पति-पत्नी संतान सुख पाना चाहते हैं और अपने संतान के सुखद, स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं, उन्हें पुत्रदा एकादशी पर साधना-दीक्षा विशेष रुप से ग्रहण करनी चाहिये।

पुत्रदा एकादशी पर्व का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्वरूप सूर्य है, सूर्य के बिना किसी भी वस्तु के दृश्य-अदृश्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती। सूर्य ही समस्त जगत का प्रकाशक एवं आत्मा है, उसकी सभी किरणें ज्ञात-अज्ञात पदार्थो में जीवन प्रदान करती हैं और सभी वनस्पतियां सूर्य के कारण ही मनुष्य के लिये योग्य हैं, सूर्य साकार स्वरूप है, जिसे सभी पूजन में सर्व-प्रथम अर्घ्य अर्पित किया जाता है, इसके पश्चात् ही दूसरे देवी-देवताओं का पूजन किया जाता है।

सोलह कला पूर्ण ओजस्वी संतान प्राप्ति पुत्रदा दीक्षा उक्त सुस्थितियों से युक्त सूर्य स्वरुपा सोलह कला पूर्ण तेजस्वी संतान प्राप्ति का एक माध्यम है। जिसके ग्रहण के पश्चात संतानहीन दम्पत्ति उच्च कोटि के देवस्वरुप संतान को प्राप्त कर सकते हैं।

**सोलह कला पूर्ण ओजस्वी संतान प्राप्ति पुत्रदा दीक्षा न्यौछावर ₹1500**

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौ. राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर 7568939648
न्यौ. राशि NIDHI SHRIMALI SBI UIT Branch Jodhpur A/c No.:20287318460
Branch Code: 006590 MICR Code: 342002010 IFSC: SBINN0006490
आश्रम:कैलाश नारायण धाम E1077 सरस्वती विहार दिल्ली-34 011-45058768 9950980966
सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।



PMYV